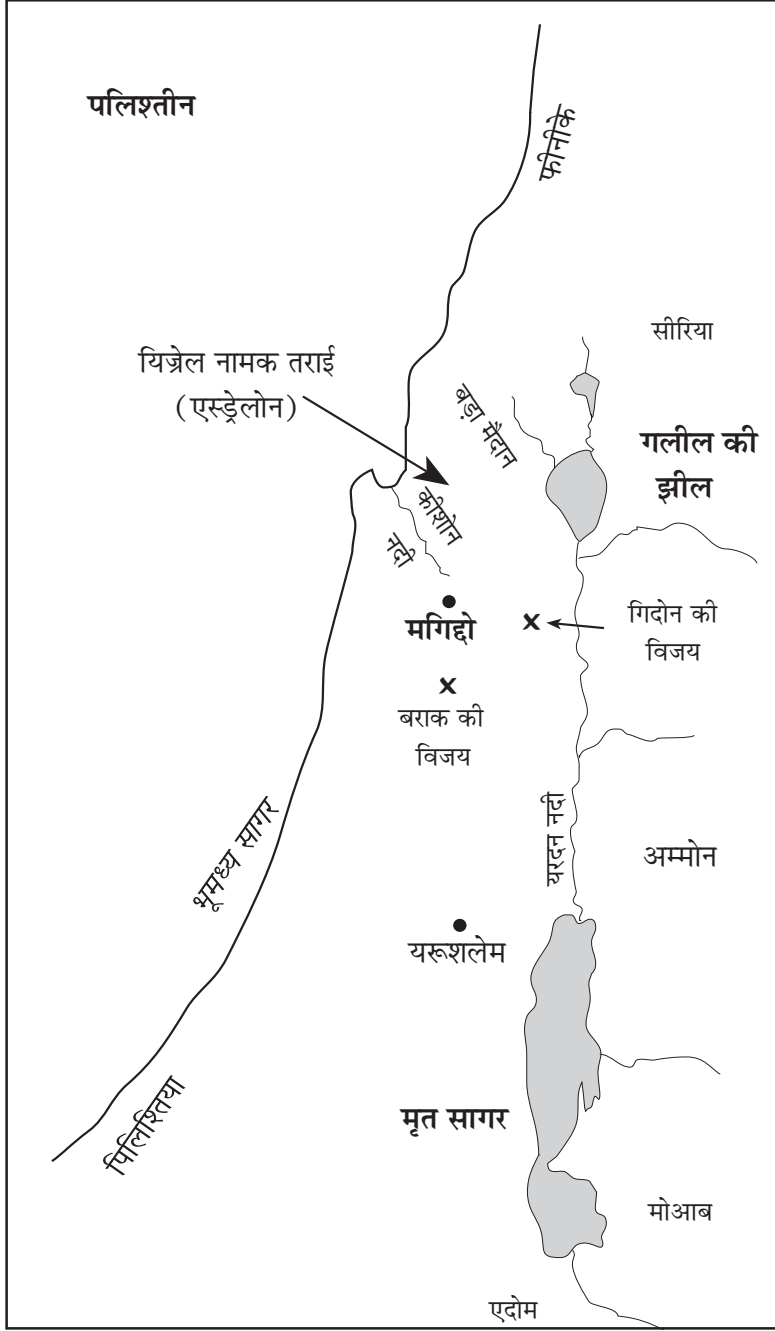


अतिरिक्त भाग



### प्रकाशितवाङ्मय में प्रयुक्त सांकेतिक अंक

- 1 = एक इकाई (केवल एक)  
2 (1 + 1) = दृढ़  
3 = ईश्वरीय अंक  
3½ (7 का आधा) = अधूरा (42 महीने; 1,260 दिन; “एक समय और समयों, और आधा समय” = परीक्षा का 3½ वर्ष का समय, भविष्य की आशा देते हुए)  
4 = सृष्टि का अंक (वैश्विक अंक, मनुष्य जाति)  
5 (10 का आधा) = सीमित सामर्थ  
6 (7 - 1) = अपूर्ण (दुष्ट, छल, असफलता)  
7 (3 + 4) = पूर्णता (पवित्र सम्पूर्णता)  
10 = मानवीय सम्पूर्णता (परिपूर्णता या सामर्थ)  
12 (3 × 4) = धार्मिक सम्पूर्णता  
24 (2 × 12) = धार्मिक सम्पूर्णता का बढ़ना  
40 (4 × 10) = मानवीय स्तर पर सम्पूर्णता  
42 (देखें 3½)  
144 (12 × 12) = धार्मिक सम्पूर्णता की सम्पूर्णता  
666 (देखें 6) = अपूर्णता, दुष्ट, छल और असफलता का बढ़ना  
1,000 (10 × 10 × 10) = सम्पूर्णता की सम्पूर्णता की सम्पूर्णता  
1,260 (देखें 3½)  
1,600 (4 × 4 × 10 × 10) = मानवीय स्तर पर पूर्णता  
7,000 (7 × 1,000) = सम्पूर्णता का बढ़ना  
12,000 (12 × 1,000) = सम्पूर्णता का बढ़ना  
1,44,000 (144 × 1,000) = सम्पूर्णता का बढ़ना  
20,00,00,000 (2 × कई 10) = अजेय सामर्थ  
1,00,00,00,000 और अधिक = असंख्य, मानवीय समझ से परे